UP Board Notes Class 6 Sanskrit Chapter 12 चन्द्रशेखर आजादः

शब्दार्थाः –

अयच्छतु = दिया,
तदानीम् = उस समय,
एकादश वर्षदेशीयः = लगभग ग्यारह वर्ष का,
नृशंसताम् = क्रूरता को (निर्दयता को),
उन्मूलनीयम् = जड़ से उखाड़ देना चाहिए,
समचालयत् = संचालित किया,
अल्पवयस्कः = कम उम्र के,
कारागारे = जेल में,
वेत्रदण्डेन = बेंत के डंडे से,
तथाविध = उस प्रकार के,
वेत्रप्रहारकः = बेंत से प्रहार करने वाला,
प्रहृतवान् = पीटा गया,
उच्छिन्नम् = उखड़ना,
घटिको = घंटा,
तावत् = तब तक,
पत्रचत्वम् = मृत्यु को,
गौराङ्गः = अंग्रेज,
सप्तविंशे दिनाङ्के = सत्ताइसवीं तारीख में,
भुशुण्डीगुटिका = बन्दूक की गोली।

"तव किं.....उन्मूलनीयम्" इति।
हिन्दी अनुवाद – 'तुम्हारा नाम क्या है ?
आजाद
तुम्हारा पिता कौन है ?
'स्वाभिमान ।'
'घर कहाँ है ?'
'जेलखाना'

गुलामी के दिनों में न्यायाधीश (जज) के प्रश्नों के इस प्रकार उत्तर जिन्होंने दिए थे, वे चन्द्रशेखर 'आजाद' थे। चन्द्रशेखर नाम का एक छात्र उन दिनों बनारस में पढ़ता था। ग्यारह वर्ष की उम्र में जब इसने जलियाँवाला काण्ड में हुए अत्याचार की बात सुनी, तब यह पक्का इरादा कर लिया कि किसी भी तरह से इस क्रूर (अत्याचारी) शासन को जड़ से उखाड़ फेंकना चाहिए। |

https://www.evidyarthi.in/

शीघ्रमेव.....निष्कासयति इति

हिन्दी अनुवाद – वह समय भी शीघ्र ही आ गया। भारत में इंग्लैंड का राजकुमार आया। शासन की ओर से उसके स्वागत के लिए जो प्रबन्ध किया गया, देशवासियों ने उसका विरोध करने का निश्चय किया। बनारस के प्रसिद्ध क्वींस नाम के संस्कृतं कॉलेज के मैदान में आयोजित कार्यक्रम में विरोध करते हुए, छोटी उम्र होने पर भी आजाद को पकड़ लिया गया। कुछ दिनों के बाद उसे अदालत में लाया गया। न्यायाधीश (जज) ने पन्द्रह बेंतों की सजा देकर कहा कि इसे बन्दीगृह से निकाल दो।

वेत्रप्रहारकः.....अमारयन् ।

हिन्दी अनुवाद – बेत लगाने वाले ने आजाद को नंगा कंरके इसकी पीठ पर इस निर्दयता से मारा कि पीठ की खाल उधड़ गई। | वह बेंत की हर चोट पर 'भारत माता की जय' का नारा तब तक कहता रहा, जब तक बेहोश नहीं हो गया। | साइमन कमीशन का विरोध करते हुए बूढ़े लाला लाजपतराय को अँग्रेजों ने इतना पीटा कि कुछ दिन बाद ही उनकी मृत्यु हो गई। इसका बदला लेने में लगे हुए आजाद, भगतसिंह, शिवराम, राजगुरु और जयगोपाल ने लाला लाजपतराय की मृत्यु के मुख्य रूप से उत्तरदायी अंग्रेज स्कॉट को मार दिया।

आजादः 1931.....प्राप्नोत।

हिन्दी अनुवाद – 27 फरवरी, 1931 को दस बजे से पहले प्रयाग के अल्फ्रेड नाम के बाग में आजाद, सुखदेव और राज के साथ बैठे थे कि नॉटबाबर द्वारा अन्य पुलिस साथियों के साथ, इन्हें अचानक चारों ओर से घेर लिया गया। नॉटबाबर की बन्दूक की गोली आजाद की जाँघ में घुस गई और आजाद द्वारा चलाई गई गोली बाबर की कलाई को छेदकर बाहर निकल गई एक घंटे तक दोनों ओर से गोलियों की बौछार होती रही। एक ओर अकेले आजाद और दूसरी ओर अनेक शत्रु। जब गोलियाँ लगभग समाप्त हो गईं, तब आजाद ने अंतिम गोली से अपने आपको मारकर 'आजाद' नाम सार्थक करते हुए स्वाधीनता के यज्ञ में अपनी आहुति दे दी और वीरगति को प्राप्त किया।

https://www.evidyarthi.in/